भग्न दूत

अज्ञेय काव्य विवेचन

(खण्ड-2)

डॉ. सुरेश चंद्र पाण्डेय

‘भग्न दूत’

अज्ञेय काव्य विवेचन
(खण्ड-2)

डॉ. सुरेश चन्द्र पाण्डेय

अव. प्राप्त रीडर-अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

डी.ए.वी.पी.जी कॉलेज

आजमगढ़ (उ.प्र.)

विषय क्रम

अज्ञेय: साहित्य-विवेचन **3**

अज्ञेय की स्थापना; अज्ञेय-काव्य के मूल्यांकन की कसौटी; अज्ञेय द्वारा प्रस्तुत कुछ प्रमुख अवधारणाएं: पथ-निर्देश; अज्ञेय-अपनी कविताओं के बारे में; सहयोगी रचनाकारों का मत-डॉ. नंदकिशोर आचार्य, पं विद्यानिवास मिश्र; प्रस्तावित अध्ययन-विधि; 'ममेतर' कौन?;

'भग्न दूत' **26**

पृष्ठभूमि; वस्तु-भाव विवेचन; कृति का अभिधान; द्वंद्व और निराशा; लक्ष्य और शक्ति संचय; प्रणय-स्मृति; विशिष्ट सत्ता का बोध; कविता और कविता के सरोकार ; निष्कर्ष; अभिव्यक्ति-पक्ष; काव्य-भाषा; अज्ञेय के बुनियादी सरोकार; छायावादी शैली से प्रभावित; पद-योजना, लययुक्त गति व्यंजक पद-योजना; अस्वीकार-क्षयमूलक/ निषेधात्मक बिम्ब; कुछ विशिष्ट शब्द प्रयोग; दीप/ दीपक, मांझी, घट, मानस-मरू; प्रकृति के चित्र; सन्दर्भ-सूची

अज्ञेय : साहित्य-विवेचन

अज्ञेय ने विपुल सहित्य की रचना की है। उनके भावों/विचारों का सोता अनेक विधाओं में फूटकर बहा है। उनका क्रमेण विवेचन इस अध्याय का प्रयोजन है। सबसे पहले हम अज्ञेय के काव्य का विवेचन करेंगे।

काव्य :

अज्ञेय मूलत: कवि हैं। उनकी स्थापना है :

'यह एक रोचक समीकरण हो सकता है कि जहाँ मैं कहानी को अपर्याप्त मानकर उपन्यास को अधिक आकर्षक पा रहा था, ठीक वहीं मैं कविता में लघु से लघुतर आकार को एक श्लाध्य और कमनीय लक्ष्य के रूप में ग्रहण कर रहा था। कहानी इसलिए नाकाफ़ी थी कि उसमें मनोजगत् की-मनोवैज्ञानिक यथार्थ की-कोई एक गाँठ, एक सन्धि, एक दरार तो एकाएक तीखे प्रकाश से आलोकित कर दी जा सकती थी पर मनोदेश का कोई नक्शा नहीं प्रस्तुत किया जा सकता था।

xx दूसरी ओर कविता में लघुतम आकार की सघनता ठीक इसीलिए काम्य थी कि सौंदर्य-प्रत्यभिज्ञा के तनाव के क्षण को यथा-संभव अक्षुण्ण रूप में प्रस्तुत और संप्रेषित किया जा सके।'[1]

अत: हम इस स्थापना के साथ आगे बढ़ना चाहते हैं कि अज्ञेय मूलत: कवि हैं और सभी विधाओं में उनके कवि-रूप के दर्शन होते हैं।

अज्ञेय-काव्य के मूल्यांकन की कसौटी :

अज्ञेय-काव्य की विवेचना के संदर्भ में सबसे पहले विचारणीय है उनके काव्य के मूल्यांकन का आधार या कसौटी क्या हो ? यह प्रश्न विचारणीय इसलिए भी है कि हिन्दी में जिसे नया साहित्य का गौरव

[1] अज्ञेय : सम्पूर्ण कहानियाँ, भूमिका, पृष्ठ, 19

प्राप्त है उसके मूल्यांकन के प्रतिमानों को लेकर अनिश्चय' की-सी स्थिति बनी हुई है और इसकी शुरुआत नयी कविता के ही एक आचार्य ने यह कहकर की कि नयी कविता को समझने के लिए पुराने आचार्यों का रस-सिद्धांत अपर्याप्त है। रस-सिद्धांत के अवमूल्यन या उसके तिरस्कृत हो जाने के बाद अलंकार-सिद्धांत और उस समूह के अन्य सिद्धांत दुम दबाकर भाग निकले : वे भला कहाँ इन आचार्यों का तेज सह पाते। मतलब यह कि नये आचार्यों के तेज में परंपरा का एक अंश जल गया-क्षत-विक्षत हो गया। और फिर जैसे किसिम-किसिम की कविता' वैसे ही 'किसिम-किसिम' के सिद्धांतों से आलोचना का बाज़ार गरम हो गया-गंगा का घाट एक-पंडे-पुरोहितों की अलग-अलग चौकियों की तरह। उनके ब्यौरों में जाना हमारा इष्ट नहीं है। लेकिन, यह रेखांकित कर देना आवश्यक है कि इससे इतना नुकसान जरूर हुआ कि अज्ञेय-काव्य का मूल्यांकन पूर्वग्रह से बाधित हो गया और उसकी सम्यक् विवेचना नहीं हो सकी और अगर हुई भी तो खण्ड रूप में ही; समग्र-रूप में नहीं। अत: अज्ञेय-साहित्य के एक जिज्ञासु अध्येता की हैसियत से हम अज्ञेय-काव्य की भाव-संपदा का एक तारतम्य में उद्घाटन करना चाहते हैं।

अज्ञेय का आलोचना-साहित्य भी कम (परिमाण और मूल्य, दोनों दृष्टियों से) नहीं है, वह बड़ा मूल्यवान् है और उसका विवेचन इसी अध्याय के एक स्वतंत्र प्रकरण में यथा स्थान किया भी जाएगा। यहाँ, सबसे पहले साहित्य की सम्यक् आलोचना के लिए अज्ञेय ने जो अवधारणाएँ की हैं उनमें से कुछ का (जिनसे उनकी कविता की समझ में भी सहायता मिल सकती है) उल्लेख करना संगत है। इसी तरह अपनी कविता की समझ के लिए भी उन्होंने कुछ दिशा-निर्देश किये हैं (फ़तवा के रूप में नहीं, साक्षात्कार में, लोगों के प्रश्नों के उत्तर में), उनका उल्लेख भी प्रासंगिक है। अज्ञेय के निकटतम सहयोगी रचनाकारों में से दो-एक के सुझाव भी उपयोगी हैं, अत: उनकी चर्चा भी सहायक होगी। अस्तु :

अज्ञेय द्वारा प्रस्तुत कुछ प्रमुख अवधारणाएँ: पथ-निर्देश :

(1) 'भारतीय कला-चेतना के केन्द्र में शब्द है। काव्य वाक् शक्ति का सर्जनात्मक रूप है।'[2]

(2) 'कविता ही कवि का परम वक्तव्य है।' और यह कि 'कवि का कथ्य उसकी आत्मा का सत्य है।' इसलिए 'व्यक्ति सत्य' को 'व्यापक सत्य' के रूप में संप्रेषित कर पाना कवि-कर्म की प्रमुख समस्या है। कवि के सामने अनेक समस्याएँ हैं- 'काव्य-विषय की, सामाजिक उत्तरदायित्व की, संवेदना के पुन: संस्कार की, x x साधारणीकरण और कम्यूनिकेशन (संप्रेषण) की,'[3] साधु और संस्कारी शब्द की, शब्द की क्रमश: घिसती हुई अर्थवत्ता के समानांतर शब्द को नया अर्थ देने की, भाषा को उसका व्यापकत्व प्रदान करने की।

(3) कवि-कर्म की सफलता की कसौटी संप्रेषण है-अज्ञेय का वक्तव्य है : वैज्ञानिक प्रगति के बावजूद 'प्रेषणीयता अब भी बुनियादी साहित्यिक मूल्य है, और संप्रेषण साहित्यकार का बुनियादी काम; किन्तु बदली हुई परिस्थितियों में प्रेष्य वस्तु और प्रेषण के साधन दोनों बदल गए हैं। यह लेखक को जानना है, पाठक को समझना है, और आलोचक को मानना है।'[4] ‘भवन्ती की तीन टीपों में अज्ञेय ने उपर्युक्त आशय को स्पष्ट किया है-

(क) 'सही शब्द पहचानना तो काफी नहीं है, सही शब्द ढालना, उच्छृत करना और करते रह सकता ही तो कवि-पद है।'[5]

(ख) साहित्य-रचना या कला-सृष्टि का लक्ष्य केवल आत्माभिव्यक्ति नहीं है; 'कृतिकार का उद्देश्य या लक्ष्य केवल अनुभव का संप्रेषण है। सहज बोध द्वारा अपनी अनुभूतियों से व्यापकतर अनुभव में प्रवेश, उन अनुभवों की पकड़ और उनका संप्रेषण-यही उसका लक्ष्य है।'

लेकिन इतना ही काफ़ी नहीं है। देखना यह है कि लेखक का अनुभव ‘कहाँ तक पूरे समाज के या

---

2 शाश्वती: पृष्ठ, 39

3 तार सप्तक-वक्तव्य, पृष्ठ, 69-70

4 हिन्दी साहित्य : एक आधुनिक परिदृश्य पृष्ठ, 24-25

5 भवन्ती, पृष्ठ, 75

मानव-जाति के अनुभव के समक्ष और समकक्ष' रखा जा सकता है ? 'जो लेखक इस दूसरी कसौटी पर भी खरा उतरता है उसे हम अच्छा लेखक मान सकते हैं। जितना ही व्यापक मूल्यवत्ता का संस्पर्श वह पाठक को देता है-उसके द्वारा पाठक तक पहुँचता है-उतना ही वह अच्छा लेखक होता है।'[6]

(ग) 'लेखक हमें जिस व्यापकतर सत्य से, सामाजिक अनुभव से संपृक्त करता है, अगर उसकी व्याप्ति, गहराई, सच्चाई की पहचान के साथ-साथ हमें पाठक की हैसियत से यह लगे कि यह सच, या कि यह अनुभव, है तो हमारा ही, हमारे जीवन का; हमारे बीच का है; पर यदि इस लेखक की प्रतिभा ने उसका संप्रेषण हम तक न किया होता, उसकी ऐसी सजीव पहचान हमें न करायी होती, तो वह अलक्षित ही रह जाता, तो वह लेखक महान् लेखक है।'[7]

(4) कविता की शक्ति : शक्ति का स्रोत शब्द :

कविता के शब्द में देश-काल की सीमाओं को अतिक्रांत करने की शक्ति होती है:

'दो शतियों के पार कवियों का मिलना अपने आप में कठिन है : फिर दो भाषाओं की ओट में से तो वह दूरी दो हज़ार वर्ष के बराबर हो जाती है-कवि-भाषा के एक-एक शब्द का हज़ार-हज़ार वर्ष का संस्कार होता है-क्योंकि जहाँ इतिहास और भाषा दो कवियों को एक-दूसरे से दूर हटाते हैं, वहाँ एक चीज़ ऐसी भी है जो दोनों को अभिन्न करती है-कविता।'[8]

(5) पाठकीय संवेदना :

कविता की समझ में पाठक की भागीदारी और पाठक की संवेदनशीलता भी जरूरी है। उसे रेखांकित करते हुए अज्ञेय लिखते हैं -

---

6 वही,पृष्ठ, 80-81

7 वही, पृष्ठ, 83

8 अन्तरा, पृष्ठ, 15